९ यथार्थ-४ : सत्ता ही इश्वर

दिनांक २६/०९/११

ईश्वर अर्थात सत्ता, व्यापक पारगामी, पारदर्शी के रूप में नित्य वर्तमान होने के आधार पर इसमें ही जड़-चैतन्य प्रकृति सम्पृक्त रहने के आधार पर सहअस्तित्व नाम है | सहअस्तित्व में सम्पूर्ण वस्तु है | व्यापक भी वस्तु है | व्यापक में समाहित पदार्थ, प्राण, जीव एवं ज्ञान अवस्थाएं इस धरती पर वर्तमान हैं | कभी भी मानव किसी भी धरती पर अवतरित होगा, ज्ञानावस्था में ही अवतरित होगा | ज्ञानावस्था के मानव ही पञ्च कोटि में गण्य होते हैं | जीव चेतना विधि से दो प्रजाति में गण्य हैं १-पशु मानव २-राक्षस मानव | विकसित चेतना विधि से मानव तीन प्रकार से गण्य है १-मानवत्व सहित मानव अर्थात मानवीयतापूर्ण जीवन; २-देवत्व सहित निर्भ्रांत मानव; ३-दिव्यत्व सहित जागृतिपूर्ण मानव | यही श्रेष्ठता का स्वरुप है | यह तीनों प्रकार के मानव जीव चेतना से श्रेष्ठ होने के आधार पर समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व पूर्वक जीना बन जाता है | फलस्वरूप नियम, नियंत्रण, संतुलन,न्याय, धर्म,सत्यपूर्वक जीना बनता है |

इसीसे भ्रममुक्त अपराधमुक्त होना बनता है | भ्रमित मानव का मतलब पागलपन होना है | इसके प्रमाण में लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्मादविधि से जीता है | ये सभी अपराध के कारण हैं | इसमें प्रश्न यही बनता है कि इससे मुक्त हो सकते हैं क्या? इसके उत्तर में यही आता है कि विकसित चेतना विधि से जीने पर मुक्त होते हैं | इसमें नियंत्रित रहना आवश्यक है,विवश रहना ठीक नहीं है | नर,नारियों के साथ सर्वेक्षण में यही पता चला है कि नियंत्रित रहना आवश्यक है | नियंत्रित रहने के लिए समझदारी से समाधान, श्रम से समृद्धिपूर्वक जीना आवश्यक है | जीने के फलस्वरूप वर्तमान में विश्वास बनता है अर्थात सहअस्तित्व में जीना बनता है |

यही अपराध मुक्त होने का मतलब है | हर मानव अपराध मुक्त होना चाहता है | परम्पराएँ अपराध के लिए विवश किया है | जैसा सठे साठ्यम समाचरेत सभी परम्पराओं में यह बात प्रचलित है | इस क्रम में मानव का मानव के साथ अपराधी होना आवश्यक हो गया | इसी क्रम में सभी परम्पराएँ किसी न किसी धर्म संविधान, राज्य संविधान एवं व्यापार विधियों से ग्रसित रहता है | यह सम्भवतः राज्य युग से शुरुआत हुई है, अब बच्चों, बड़ों, बूढों में प्रचलित हो गयी है | ये तीनों भाग अपराध का पहला सीढी है | दूसरा सीढ़ी संघर्ष एवं युद्ध है | संघर्ष एवं युद्ध के चलते वीर चक्र, परमवीर चक्र प्रस्तुत किया जाता है | इससे यह पता चलता है कि अपराधिक प्रवृत्ति का सम्मान किया जाताहै | राज्य सम्मान, समुदाय सम्मान इसके साथ जुड़ारहताहै | इससे कैसे बचें यही मुख्य बात है | इस क्रम में विकसित चेतना स्वीकृत होता है |

विकसित चेतना विधि से हर मानव अर्थात हर नर-नारी अपराध मुक्त होना सम्भव हो गया है | अपराधमुक्त होना ही भ्रममुक्त होने का परिचय है अथवा प्रमाण है | इस क्रम में मानव में अपने मानवत्व सहित उपयोगिता, पूरकता विधि से जीना बनता है | यही अपराध मुक्ति का फलन है अथवा जागृति का फलन है | अपराध मुक्ति जागृतिपूर्वक ही होता है | मानवत्व ही देव मानवत्व, दिव्य मानवत्व के रूप में गण्य होता है | यह मुख्य रूप से समझने, जीने, प्रमाणित करने, वर्तमानित करने का वस्तु है | इसी स्वरुप में मानव अखण्डता,सार्वभौमता को सहज रूप में प्रमाणित करता है |

मानव अपने स्वरुप में सदा से अच्छाई व सच्चाई का पक्षधर है | यथार्थ का पक्षधर है | कुकर्म, दुष्कर्म का पक्षधर नहीं है | घटना के साथ घटनाओं को घटित करते हैं उसके पक्षधर नहीं रहते, यही भ्रमित व्यक्ति का विडंबना या संकट है | इस प्रकार मानव का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि मानव जागृतिपूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में प्रमाणित होता है | सहअस्तित्व ही निरंतर घटना का आधार है | सहअस्तित्व ही नित्य वर्तमान है | सकारात्मक रूप में सहअस्तित्व सर्वमानव में, से, के लिए आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत है, अनिवार्यता के रूप में प्रस्तुत है क्योंकि मानव सद्बुद्धि का पक्षधर है दुर्बुद्धि का पक्षधर नहीं है | जीव चेतना में रहते हुए भी मानव अर्थात अभिभावक अपने संतानों को योग्य तभी मानते हैं जब वह आजीविका में समर्थ हो जाए | यह भाव अथवा मूल्यांकन प्रचलित हो चुका है | इस क्रम में जीता हुआ मानव परम्परा अपने संतान को यदि समझदारी के साथ श्रमपूर्वक जीना जोड़ लेते हैं तभी मानवत्व का परिचय होगा | अपराधमुक्ति का मार्ग यही है | इसी में अभय, सहअस्तित्व प्रमाणित होता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत